* श्रीनेमिनाथाय नमः *

जिनवाणी संग्रह

अर्थात्

बृहद् जैन सिद्धान्त संग्रह।

सम्पादक—

व्याकरण रत्न, पं० सतीशचन्द्र जैन, न्यायतीर्थ।

पं० कस्तूरचंद छावड़ा "विशारद"

प्रकाशक—

दुलीचंद पन्नालाल, परवार

मालिक—जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,

बड़ाबाजार, कलकत्ता।

द्वितीय संस्करण १५०० दीपावली २४५२ मूल्य सवा दो रुपया।